नर्मदा प्रसाद उपाध्याय : सृजन और सम्मान

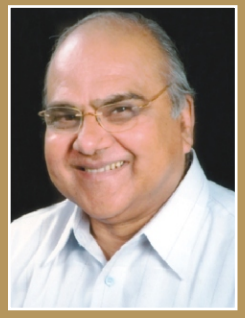

सम्पादन – समांतर लघुकथाएं (1978), नरेन्द्र कोहली : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (1984), Sur : A Reticent Homage, 2003

ललित निबंध संग्रह – एक भोर जुगनू की (1993), अंधेरे के आलोक पुत्र (1994), नदी तुम बोलती क्यों हो ?(1996), फिर फूले पलाश तुम (1996), सुनो देवता (1997), बैठे हैं आस लिए (1998), प्रभास की सीपियां (1999), परदेस के पेड़, (2002), अस्ताचल के सूर्य (2006), रस पुरुष–पं. विद्यानिवास मिश्र (2010), तुम नहीं दिखे नगाधिराज (2012) **भारतीय कला** – भारतीय चित्रांकन परंपरा (2003), "The Concept of portrait (In the context of Indian Miniature Painting) 2005", Geet Govinda: Paintings in Kanheri Style 2006 (Mapin Publication, Ahemadabad, simultaniously published from USA.) , पार रूप के (2009)।

The Color's Fragrance [(The Catlouge of The Stray Leaves & Illustrated Manuscripts In The Scindia Oriental Research Institute, Vikram University, Ujjain (M.P.)]

राधा माधव रंग रँगी (गीत–गोविन्द की सरस व्याख्या) (1998), रामायण का काव्य मर्म (2001) – डॉ0 विद्यानिवास मिश्र के साथ गीत–गोविन्द और रामायण के कलात्मक पक्ष पर कार्य।

पुरस्कार – 'एक भोर जुगनू की' – मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा मुकुटधर पांडेय पुरस्कार से पुरस्कृत–1992, 'अंधेरे के आलोक पुत्र' – मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा वागीश्वरी पुरस्कार से पुरस्कृत–1993.

भारतीय चित्रांकन परंपरा की मौलिक समीक्षा के लिए वर्ष 2003 में उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के 'कलाभूषण' सम्मान, शमशेर सम्मान, संत सिंगाजी सम्मान तथा अक्षर आदित्य सम्मान सहित देश एवं विदेश के अनेक सम्मानों से सम्मानित।

फेलोशिप –

वर्ष 2003 – चॉर्ल्स इण्डिया वॉलेस ट्रस्ट, लंदन (ब्रिटिश कॉउन्सिल)

वर्ष 2008 – शिमेंगर लेडर फेलोशिप, जर्मनी.

सम्प्रति – सदस्य, वाणिज्यिक कर, अपील बोर्ड मध्य प्रदेश, भोपाल
मोबाइल : 094250–92893, ईमेल–upadhyayanarmada@yahoo.co.in

शीघ्र प्रकाश्य..... (पर्यूषण पर्व 2012 के पुण्य अवसर पर)

जैन चित्रांकन परम्परा

(आहोर कल्पसूत्र के विशेष संदर्भ में)

प्रख्यात कलाविद् तथा साहित्यकार श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय द्वारा जैन चित्रांकन परम्परा के समग्र पक्ष पर प्रकाश डालती सर्वथा मौलिक, शोधपूर्ण तथा अद्यतन जानकारी को समेटती सहज भाषा में रची गई अद्वितीय कृति।

प्रकाशक

श्री बेनी माधव प्रकाशन गृह
इन्दिरा गांधी वार्ड, हरदा (म.प्र.) 461331
फोन : 07577–222500
मो.–098262–93099
e-mail:naman60@hotmail.com

मूल्य – 2000/–
एक से अधिक प्रति क्रय करने पर 15% की विशेष छूट
मूल्य में पैकिंग व मार्ग व्यय भी सम्मिलत है।

जैन चित्रांकन परम्परा को न केवल इस हेतु श्रेय दिया जाना चाहिए कि उसने अत्यन्त प्राचीन समय में सचित्र ग्रन्थों के निर्माण करने का दायित्व निभाया अपितु इस हेतु भी श्रेय दिया जाना चाहिए कि जैन चित्रांकन परम्परा ने भारत की चित्रांकन परम्परा को अप्रतिहत रूप से जारी रखा।

नृत्यरत नायिका : अगरजी मंदिर, रतलाम : भित्तिचित्र : 19वीं सदी

जैन चित्रांकन की यह परम्परा इस तथ्य का स्पष्ट संकेत देती है कि यदि यह परम्परा विद्यमान नहीं रहती तो बहुत संभव था कि भारतीय चित्रांकन परम्परा का इतिहास विश्रृंखल हो जाता। जैन चित्रांकन के कारण ही यह समर्थ प्रमाण हमारे पास है कि अजन्ता की रेखा विलुप्त नहीं हुई और एलोरा के अंकनों की सांसें नहीं थमीं। इस परम्परा का लंबा काल यह भी सिद्ध करता है कि जैन कलाकारों के पास असीम धैर्य था तथा साधना की अपूर्व क्षमता थी। वे भगवान महावीर के सच्चे श्रमण उपासक थे जिन्होंने अपने त्याग के बल पर, अपने निजस्व को लोक के लिए मिटाकर ऐसी सर्जना की जिसे कोई भी काल कभी नहीं मिटा पाएगा।

इसी कृति से

"महाराजा सिद्धार्थ तथा महारानी त्रिशला"

"भगवान महावीर का जन्म"

इस कृति में जैन चित्रांकन की परम्परा के साथ–साथ 'जैन धर्म : कर्म और मर्म' शीर्षक अध्याय में जैन धर्म के इतिहास तथा दर्शन पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही भारतीय चित्रांकन परम्परा पर भी चित्रों से सज्जित एक अध्याय है। ऐसे सचित्र जैन ग्रन्थ जो नवीं सदी से उन्नीसवीं सदी तक देश के विभिन्न अंचलों की शैलियों में ताड़पत्र, भोजपत्र तथा काग़ज़ पर बने, के संबंध में विशद् जानकारी दी गई है तथा आहोर 'कल्पसूत्र' के चित्रों की चित्रावली के साथ पूरे विश्व में संरक्षित सचित्र कल्पसूत्रों का भी विवरण दिया गया है। यह कृति न केवल प्रत्येक जैन अपितु प्रत्येक जिज्ञासु भारतीय के लिए अपनी अनमोल विरासत से परिचित कराने वाली महत्वपूर्ण कृति है।